Daily Gospel Reflections in Hindi

25 July 2019

मत्ती 20: 20-28

NOT TO BE SERVED BUT TO SERVE

''मानव पुत्र भी अपनी सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने तथा बहुतों के उद्धार के लिए अपने प्राण देने आया है'' – इंसान, बस उतना ही सुनता–समझता है, जितना वह चाहता है। सामने वाले की पूरी बात सुनने–समझने का न ही हमारे पास वक्त है, और न ही धैर्य। क्योंकि हमारे मन में न केवल अपने लिए, बल्कि सामने वाले के लिए और पूरी दुनियां के लिए, एक से बढ़कर एक योजनाएं पहले से मौजूद है। जब प्रभु ने पहली बाार अपने दुःख भोग और मृत्यु की भविष्यवाणी की थी, तब भी यही हुआ। पेत्रुस ने कहा– ''ईश्वर ऐसा न करें। प्रभु! यह आप पर कभी नहीं बीतेगी'' (Mt. 16:22)। प्रभु के रूपान्तरण के समय भी यही हुआ (Mt. 17:1-8)।

यहूदियों का विश्वास था कि मसीह आएंगे। लेकिन उनकी प्रतीक्षा और अपेक्षा के मसीह और ईश्वर के विधान के अनुसार मसीह में जमीन–आसमान का फर्क था। यहूदी, मकाबी भाईओं जैसा एक मसीह की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो उन्हें रोमियों के चंगुल से मुक्त करेगा, एक ऐसा मसीह जो अन्य राजाओं को इस्राएल के अधीन करता और उस पर अनन्तकाल तक शासन करता। लेकिन ईश्वर ने नबी इसायाह द्वारा संदेश दिया था– ''मैंने मारने वालों के सामने अपनी पीठ कर दी, और दाढ़ी नोचने वालों के सामने अपना गाल..... मैं जानता हूं कि अन्त में मुझे निराश नहीं होना पड़ेगा'' (Is. 49:6-7)। यह है ईश्वर के विधान के अनुसार मसीह। प्रभु ने तीन बार अपने दुःखभोग और मृत्यु की भविष्यवाणी की थी (Mt. 16:21,17:22,20:17)। तीसरी भविष्यवाणी तो इसी अध्याय में आज के सुसमाचार पाठ के पहले की थी। बावजूद इसके, शिष्यों की अलग योजना थी। जेबदी पुत्र अन्य शिष्यों से पहले अपना भविष्य सुनिश्चित करना चाहते थे। क्योंकि उनकी योजना अनुसार प्रभु मसीह, रोमियों को खदेड देंगे, और इस्राएल पर उनका राज्य कायम करेंगे। जाहिर सी बात है कि प्रभु के बाद वे अपना सिक्का चलाने चाहते थे होंगे।

लेकिन प्रभु बड़े इत्मिनान से, साफ लफ्जों में कहते है कि वे स्थान उन के लिए नहीं, बल्कि ''उन लोगों के लिए है, जिन के लिए मेरे पिता ने उन्हें तैयार किया है'' (Mt. 20:23)। आगे, प्रभु उन्हें समझाते है कि एक नेता या प्रधान कैसे होना चाहिए। प्रभु के रास्ता या क्रूस का रास्ता अपनाए बिना कोई ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। स्वयं शिष्यों के पैर धोकर प्रभु ने सेवा और प्रेम की आज्ञा दी थी। हमें भी प्रभु के लिए योजनायें बनाना बंद करनी होगी। हमें भी अपना क्रूस उठाकर, चुपचाप, प्रभु के पीछे जाना होगा। क्या जाने राजा हम से भी कहें – ''मेरे पिता के कृपापात्रों ! आओं और उस राज्य के अधिकारी बनो, जो संसार के प्रारंभ से तुम लोगों के लिए तैयार किया गया है'' (Mt. 25:34)।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019